"क्षात्र धर्म की दिव्य प्रभा से जग उजियारा होगा रे"

पूज्य श्री तनसिंह जी

जन्म शताब्दी समारोह

28 जनवरी 2024, रविवार, अपराह्न 12.15 बजे

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली

निवेदक

श्री क्षत्रिय युवक संघ

आयोजक - भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट

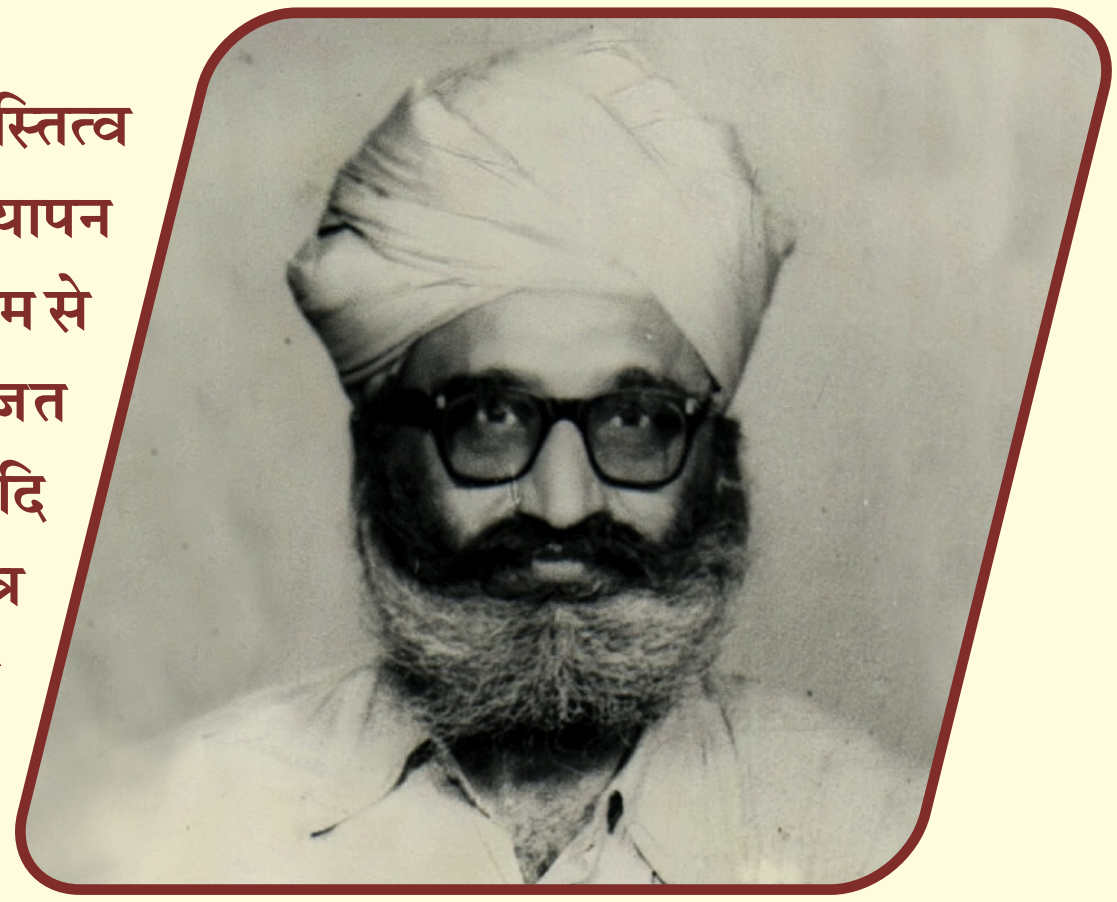

विश्वात्मा के दृष्टिकोण से हमारे अस्तित्व का कारण खोज कर उसी के अनुरूप जीवनयापन की शैली को हमारे मनीषियों ने स्वधर्म के नाम से संबोधित किया। परमेश्वर द्वारा सृजित त्रिगुणात्मक सृष्टि में सत्य, न्याय, प्रकाश आदि सतोगुणीय अमृत तत्वों की शस्त्र और शास्त्र द्वारा रक्षा करने के लिए त्याग और बलिदान की अनूठी परंपरा को क्षात्र धर्म के नाम से विभुषित किया गया और यही क्षत्रिय का स्वधर्म कहलाया। सृष्टि के प्रारंभ से ही हमारे पूर्वजों ने अपने इस स्वधर्म के पालनार्थ युग के प्रत्येक मोड़ पर अपने आचरण का उदाहरण प्रस्तुत कर भारतवर्ष के सभी वर्गों में दायित्व बोध जागृत रखा जिसके कारण भारत विश्वगुरु कहलाया।

कालांतर में भारत का यह दायित्व बोध क्षीण होता गया। दायित्व पर अधिकार ने महत्त्व पा लिया जिसकी परिणति भारतीय समाज के विखंडन के रूप में हुई। वह विखंडित शक्ति विधर्मी आक्रमणों के समक्ष हारकर गुलाम हो गई। भारत की इस दुर्दशा के बारे में अनेक महापुरुषों ने चिंतन किया, भारतीय जनमानस को इसके कारण और परिणामों के बारे में बताया और इस स्थिति से उबरने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

ऐसे ही महापुरुष थे पूज्य श्री तनसिंह जी। वे भारत की गुलामी के उत्तरार्ध काल में 25 जनवरी 1924 को भारत के सुदूर पश्चिमी प्रांत राजस्थान के जैसलमेर जिले के बेरसियाला गांव में जन्मे। जीवन में सभी प्रकार की विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए उन्होंने अपने आसपास के वातावरण को देखा, उस पर चिंतन किया, अध्ययन किया और पाया कि भारत की वर्तमान दुर्दशा का कारण उसका अपने दायित्व बोध से विरत हो जाना है। उन्होंने पाया कि दायित्व बोध जागृत करने का शिक्षण और प्रशिक्षण हमारे परिवारों और शिक्षा केन्द्रों से लुप्त हो गया है और इसके कारण उत्तरोतर रूप से व्यक्ति की परिवार, समाज और संसार के लिए त्याग और बलिदान की परंपरा कुंद हो गई है। इस अभाव की पूर्ति के लिए अपने उदात्त त्याग और बलिदान की परंपरा से संपूर्ण भारतवर्ष का नेतृत्व करने वाले क्षत्रियों से प्रारंभ करने का उन्होंने संकल्प लिया और इसके लिए 22 दिसंबर 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में एक सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली की स्थापना की जो क्षत्रिय समाज के युवाओं को उनके स्वधर्म 'क्षात्र धर्म' की शिक्षा व प्रशिक्षण देकर परिवार, समाज और संसार के प्रति उनके दायित्व बोध को जागृत कर रही है।

पूर्वजों की भाति हम स्वधर्म का पालन करें

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी इस प्रणाली का आधार भारतीय संस्कृति के सारभूत संदेश श्री मद्भगवद्गीता को बनाया और निष्काम कर्म योग की साधना के लिए गीतोक्त अभ्यास और वैराग्य के मार्ग का अनुसरण करते हुए एक मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रणाली से कार्य प्रारंभ किया।

श्री क्षत्रिय युवक संघ विगत 77 वर्षों से संसार के कोलाहल से दूर रहकर प्रचार और प्रदर्शन से परहेज करते हुए क्षत्रिय समाज के युवाओं में दायित्व बोध जागृत करने में संलग्न है। इसके लिए संघ राजस्थान और गुजरात में सघन रूप से एवं महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश, हरियाणा व दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में आंशिक रूप से प्रतिवर्ष सैंकड़ों शिविर लगाता है एवं शाखाओं द्वारा शिविरों में प्रदत्त शिक्षण को पुष्ट करता है।

विगत 22 दिसंबर 2021 को संघ ने अपना 75वां स्थापना दिवस 'हीरक जयंती' जयपुर में मनाया जिसमें लाखों की संख्या में क्षत्रिय समाज की महिलाओं व पुरुषों की मर्यादित एवं गरिमापूर्ण अनुशासित उपस्थिति ने संपूर्ण भारत का ध्यान श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर आकृष्ट किया और सभी जगह से पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन दर्शन और उसके क्रियात्मक स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़ने की मांग आने लगी। साथ ही ऐसा ही मर्यादा पूर्ण समारोह भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित कर संपूर्ण राष्ट्र के सम्मुख क्षत्रिय चरित्र के आदर्श को प्रस्तुत करने के प्रस्ताव भी आने लगे। उसी मांग और प्रस्ताव की अनुपालना में श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष जनवरी 2023 से जनवरी 2024 तक मना रहा है। जन्म शताब्दी वर्ष के इस अभियान की पूर्णाहुति पर आगामी 28 जनवरी 2024 'रविवार' को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एक विशाल समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया है जिससे संपूर्ण संसार के समक्ष क्षत्रिय चरित्र के आदर्श को प्रस्तुत किया जा सके। हम सबसे संघ यह अपेक्षा करता है कि हम यथा शक्ति एवं यथा योग्य इस आयोजन में सहयोगी बनें और पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त दायित्व बोध के शिक्षण को अंगीकार कर भारत की भारतीयता के वास्तविक स्वरूप कोटुम्बिय भाव को संसार के सम्मुख प्रस्तुत करें।

अमृत रूपी संस्कृति का गरल से रक्षण करें

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयन्ती समारोह की झलकियां